BA Part I (H)
Paper I

Dr. Chiranjeev Kumar Thakur
Assistant Professor (GT)
Department of Sociology
VSJ College Rajnagar

सामाजिक मानदण्ड (प्रतिमान) (Norms) → दैनिक जीवन की अनेकानेक एवं विभिन्न क्रियाओं में एक व्यक्ति को किस प्रकार का व्यवहार करना चाहिये, इस प्रकार के प्रश्नों के समाजानुमोदित प्रत्युत्तरों को ही मानदण्ड या आदर्श नियमाचार की संज्ञा दी जाती है। मानदण्ड किसी समाज के ऐसे नियमाचार हैं जो इस बात की व्याख्या करते हैं कि एक व्यक्ति के लिए स्थिति विशेष में क्या वांछनीय अथवा स्वीकृत व्यवहार है और क्या नहीं। अर्थात् मानव व्यवहार को नियमित एवं नियंत्रित करने वाले निर्देशात्मक विधि-विधानों को मानदण्ड कहा जाता है जो व्यक्तियों को किसी समाज विशेष में किसी कार्य को सम्पादित करने का एक निश्चित मार्ग अनुसरण करने के लिये बाध्य करते हैं।

रॉबर्ट बीरस्टीड (social order) → सामाजिक मानदण्ड संक्षेप में कार्य प्रणालियों की प्रमाणित विधियाँ हैं, कार्य सम्पन्न करने का एक तरीका है हमारे समाज द्वारा स्वीकृत है।

किम्बाल यंग → सामाजिक प्रतिमान ~~की एक सामान्य~~ समूह की अपेक्षाएँ हैं।

स्पष्ट है सामाजिक मानदण्ड समाज में व्यवहार करने के निश्चित एवं प्रमाणित तरीके हैं जो समाज द्वारा स्वीकृत और साथ ही जो हमारे जीवन के हर क्षेत्र में विद्यमान हैं।

सामाजिक मानदण्ड (प्रतिमान) की विशेषताएं ⇒

(1) सामाजिक मानदण्ड (प्रतिमान) का अर्थ उन सामाजिक नियमों से है जिनके पालन की अपेक्षा उस समाज के सभी ~~सदस्य~~ सदस्यों से की जाती है।

(2) सामाजिक प्रतिमानों में अनेक छोटे एवं बड़े नियम और उपनियम होते हैं।

(3) सामाजिक मानदण्ड सभी समाजों में अनिवार्य रूप से पाए जाते हैं। हम ऐसे मानव समाज की कल्पना नहीं कर सकते हैं जिसमें कोई आदर्श नियम न हो।

(4) सामाजिक मानदण्ड भिन्न-भिन्न मानव समूहों के बीच उत्पन्न होने वाले संघर्षों में सामाजिक अस्तित्व की रक्षा करते हैं।

(5) सामाजिक मानदण्ड का पालन बाह्य दबाव के कारण ही नहीं किया जाता वरन् इसलिए भी किया जाता है कि लम्बे समय से उनका पालन करने के कारण वे मानव व्यवहार के अभिन्न अंग बन चुके हैं और मानव स्वाभाविक रूप से अपने व्यवहार में अनजान उनका पालन करता है।

(6) सामाजिक प्रतिमान मानव का पथ प्रदर्शन करते हैं तथा व्यक्ति अपने व अन्य व्यक्तियों के बारे में स्थितियों को निर्धारित करते हैं।

(7) सामाजिक मानदण्ड नैतिक कर्तव्य की भावना से सम्बन्धित होते हैं।